IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

डॉ. भीमराव अंबेडकर जी के शैक्षिक विचारों का वर्तमान परिप्रेक्ष्य में अध्ययन

मनप्रीत कौर
शोधकर्त्री (एम.एड)
कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय,
कुरूक्षेत्र

प्रदीप हंस
शोधकर्ता (एम.एड)
कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय,
कुरूक्षेत्र

डॉ. ज्योति खजूरिया
असिस्टैंट प्रोफेसर
कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय,
कुरूक्षेत्र

सारांश.

प्रस्तुत शोध का मुख्य उद्देश्य डॉ. भीमराव अंबेडकर जी के शैक्षिक विचारों का वर्तमान परिप्रेक्ष्य में अध्ययन करना है। डॉ. भीमराव अंबेडकर जी स्वयं शिक्षक हैं और इनके शैक्षिक का वर उद्देश्यों का वर्तमान शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान है। इनके द्वारा दिए गए शैक्षिक विचार आधुनिक समाज के लिए प्रासंगिक हैं। उनका मानना था कि शिक्षा लोगों के जीवन स्तर को ऊपर उठाने का सबसे महत्वपूर्ण साधन है। इनका नारा था- "शिक्षित, एकजुट, संघर्ष"। मानवीय गरिमा और स्वाभिमान इनके सामाजिक दर्शन के केंद्र में थे। डॉ. भीमराव अंबेडकर समाज में न्याय, समानता, बंधुता/बंधुत्व, स्वतंत्रता, निडरता स्थापित करना चाहते थे। डॉ.भीमराव अंबेडकर जी नारी, दलित व पिछड़े लोगों को शिक्षित करके समाज में व्याप्त उच्च और नीच के अंतर को मिटाना चाहते थे। डॉ. भीमराव अंबेडकर जी को "गरीबों का मसीहा" कहा जाता है व दलित वर्ग इनको प्यार से 'बाबासाहेब' कह कर बुलाते हैं। इस शोध में दार्शनिक व ऐतिहासिक विधि के साथ प्राथमिक व द्वितीयक् स्त्रोतों का प्रयोग किया गया है। शोध का आधार शैक्षिक विचार, प्रांसगिकता और शैक्षिक निहितार्थ है। डॉ. अंबेडकर जी ने दलित व पीड़ित जनसमुदाय को शिक्षित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

मुख्य बिंदु– डॉ. भीमराव अंबेडकर जी के अनुसार शैक्षिक उद्देश्य, डॉ. भीमराव अंबेडकर जी के शिक्षा संबंधी उद्धरण, वर्तमान समय में प्रासंगिकता और शैक्षिक निहितार्थ।

परिचय

डॉ. भीमराव अंबेडकर जी दूरदर्शी थे। उनके अनुसार समाज के पिछड़ेपन को दूर करने का एकमात्र साधन शिक्षा है। इसके बिना मनुष्य पशु समान है। डॉ. भीमराव जी ने मानव में बौद्धिक विका, स्वतंत्रता, निडरता के गुणों को बढ़ाने के लिए शिक्षा पर बल दिया। समाज में व्याप्त कुरीतियों के जैसे- भेदभाव, छुआछूत के दंश को डॉ. अंबेडकर ने अपने शरीर पर झेला था। इसलिए ये सभी दलित व पीड़ित जनसमुदाय को उच्च शिक्षा प्रदान करके उनके स्तर को ऊपर उठाना चाहते थे, जो केवल शिक्षा के द्वारा ही संभव था। समाज में व्याप्त अमीर और गरीब, उच्च व नीच की खाई को वे समाप्त करना चाहते थे। इन्होंने नारी की दयनीय स्थिति को देखते हुए उनको भी शिक्षा प्राप्ति के लिए प्रोत्साहित किया। इनका मानना था कि लड़के को शिक्षा प्रदान करने पर केवल वही शिक्षा प्राप्त करता है, लेकिन लड़की को शिक्षा प्रदान की जाए तो पूरे परिवार को शिक्षित करती है। क्योंकि एक बच्चे की प्राथमिक गुरु उसकी माता होती है। इसलिए एक बच्चे के सर्वांगीण विकास के लिए उसकी माता या एक स्त्री का शिक्षित होना अत्यंत आवश्यक होता है। उन्होंने कहा है कि "मैं एक समुदाय की प्रगति को उस प्रगति की डिग्री से मापता हूं जो महिलाओं ने हासिल की है।" इनके अनुसार ज्ञान हर व्यक्ति के जीवन का आधार है। इसलिए बिना किसी भेदभाव के सभी को शिक्षा प्रदान की जानी चाहिए। यह राष्ट्र की प्रगति के लिए आवश्यक है। क्योंकि वह राष्ट्र प्रगति की ओर अग्रसर होता है, जिसके नागरिक शिक्षित होते हैं। इनका मत है कि जब लोग शिक्षा के बिना काम करते हैं तो यह मानव शक्ति को बर्बाद करने के समान है। वर्तमान समय में उनका यह मत सत्य होता दिखाई देता है। वर्तमान समय में अशिक्षित (अज्ञानी) व्यक्ति ऊंचे पद पर आसीन हैं और शिक्षित व उच्च कौशल से युक्त व्यक्ति बेरोजगार घूम रहे हैं। यह मानव शक्ति की बर्बादी ही है। इस प्रकार कोई भी राष्ट्र प्रगति नहीं कर सकता। डॉ. भीमराव अंबेडकर जी को संविधान निर्माता भी कहा जाता है। इन्होंने संविधान में सभी के लिए शिक्षा अनिवार्य की है।

समस्या कथन

डॉ. भीमराव अंबेडकर जी के शैक्षिक विचारों का वर्तमान परिप्रेक्ष्य में अध्ययन।

अध्ययन के उद्देश्य

- डॉ. भीमराव अंबेडकर जी के शैक्षिक विचारों का अध्ययन करना।
- डॉ. भीमराव अंबेडकर जी के शैक्षिक विचारों का वर्तमान शिक्षा में योगदान का अध्ययन करना।

अध्ययन विधि

प्रस्तुत शोध में प्राथमिक स्रोत और द्वितीयक स्रोत का उपयोग किया गया है।

अध्ययन की परिसीमाएं

- प्रस्तुत शोधकार्य डॉ. अंबेडकर जी के शैक्षिक दर्शन तक ही सीमित है।
- प्रस्तुत शोधकार्य में केवल उपलब्ध प्राथमिक और द्वितीयक स्त्रोतों का उपयोग किया गया है।

भीमराव अंबेडकर जी के अनुसार शैक्षिक उद्देश्य

डॉ. अंबेडकर के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य यह है कि प्राथमिक शिक्षा में यह देखना कि प्रत्येक बच्चा जो विद्यालय में प्रवेश करता है, तभी विद्यालय छोड़े जब वह साक्षर बन जाए। उन्होंने शिक्षा के दो उद्देश्यों की पहचान की है-

- **प्रथम**- शिक्षा दूसरों की भलाई के लिए प्राप्त करना।
- **दूसरा**- शिक्षा को अपने बेहतरी के लिए प्राप्त करना।

इनके नजरिए से शिक्षा के सामाजिक और नैतिक उद्देश्य:-

- निराश व्यक्तियों को अपने विचारों को आगे बढ़ाने के लिए जागरूक करना।
- शिक्षा के माध्यम से एकता और स्वतंत्रता की ओर बढ़ाना।

स्पष्ट तौर पर कहें तो शिक्षा का उद्देश्य समानता, न्याय, स्वतंत्रता, नैतिक मूल्यों द्वारा चरित्र को विकसित करना और सभी वर्ग के लड़के-लड़कियों में समानता।

शिक्षक

डॉ भीमराव अंबेडकर स्वयं अभिनव(innovative) और रचनात्मक शिक्षक थे। इनके अनुसार शिक्षा सतत प्रक्रिया है और अध्यापक इसे वास्तविक आधार प्रदान करता है। इसलिए बच्चे की शिक्षा, पूरी तरह से प्रमाणिक ज्ञान,आत्मनिर्भरता, सीखना और शिक्षक के कौशल प्रदान करने पर निर्भर करती है। डॉ. भीमराव जी ने अपनी शिक्षा में त्रिकोणीय सूत्र (चिंतन, अध्ययन, वचन-मनन) अपनाया। इसके कारण व्यापक अर्थों में सामाजिक शिक्षक बने डॉ. अंबेडकर के अनुसार शिक्षक को बहुआयामी, तेज दिमाग और अच्छे चरित्र का होना चाहिए। शिक्षक राष्ट्रीय निर्माता है क्योंकि शिक्षा उसके हाथ में है। देश का विकास शिक्षित जनशक्ति पर निर्भर करता है।

पाठ्यक्रम

डॉ. भीमराव अंबेडकर के अनुसार स्कूलों या विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रम के लिए विस्तृत रूपरेखा होनी चाहिए। साथ में, अध्यापकों को इस बात की स्वतंत्रता होनी चाहिए कि वे पाठ्यक्रम की रूपरेखा तैयार करने में अपना चिंतन प्रस्तुत करें। इनके अनुसार पाठ्यक्रम में उच्चतम व नवीनतम ज्ञान होना चाहिए। उनका मानना था कि विश्वविद्यालय एक निश्चित परिधि में शिक्षा और परीक्षा के लिए नहीं बल्कि शिक्षा व शोध के केंद्र होते हैं।

शिक्षण विधियां

डॉ. भीमराव अंबेडकर के अनुसार शिक्षण विधियां निम्नलिखित हैं।

1. लोकतांत्रिक विधि
2. शिक्षण विधि
3. तुलनात्मक विधि
4. वैज्ञानिक विधि
5. यथार्थवादी विधि

स्कूल

डॉ. भीमराव अंबेडकर जी के अनुसार- "स्कूल एक कारखाना है, जहां पर नियमित कामकाज अनुशासित तरीके से व्यवस्थित होते हैं। इस कारखाने में संस्था का कुशल फॉरमैन (अध्यापक) कच्चे माल (विद्यार्थी) को अच्छी गुणवत्ता वाले उत्पाद में परिवर्तित करता है।" साथ ही कहा कि विद्यालय एक पवित्र संस्था है जहां छात्रों के मन सुसंस्कृत होते हैं। इन्होंने पीपुल्स एजुकेशन सोसाइटी की स्थापना करके आदर्श शिक्षण संस्थान की शुरुआत की। उच्च शैक्षणिक योग्यता को ही वरीयता दी गई। उन्होंने अपने शिक्षण संस्थानों में दलित समुदाय के विद्यार्थियों के प्रवेश को महत्व दिया।

छात्र

डॉ. भीमराव अंबेडकर जी ने अनेक वर्षों तक विभिन्न शिक्षण संस्थानों में प्रोफेसर के रूप में कार्य किया था। इसलिए इन्हें छात्रों के मन की गहरी समझ थी। उन्होंने माना कि शिक्षा के माध्यम से छात्रों का आत्मविश्वास बढ़ाना चाहिए। साथ ही मूल्य आधारित शिक्षा पर भी बल दिया। उन्होंने कहा कि ज्ञान के साथ-साथ शिष्टता भी आवश्यक है, बिना शिष्टता के ज्ञान व्यर्थ है। इनके अनुसार बच्चों में तार्किक सोच को ध्यान में रखकर पाठ्यक्रम व शिक्षण सामग्री को तैयार किया जाना चाहिए।

ज्ञान

डॉ. भीमराव अंबेडकर जी के अनुसार ज्ञान का अर्थ 'प्रकाश' है। यही प्रकाश व्यक्ति के सामाजिक, आर्थिक व नैतिक विकास का आधार बनता है। इनका कहना है कि बुद्धि तलवार की तरह है, जो इसे धारण करता है,हर समाज उसे पहचानता है। ज्ञान के माध्यम से आत्म-पुनर्निर्धारण की उपलब्धि ही शिक्षा का मुख्य उद्देश्य है।

डॉक्टर भीमराव अंबेडकर जी के शिक्षा संबंधी उद्धरण:-

- "मंदिर जाने वाले लोगों की लंबी कतारें, जिस दिन पुस्तकालय की ओर बढ़ेगी, उस दिन मेरे इस देश को महाशक्ति बनने से कोई रोक नहीं सकता है।"
- "यह जानते हुए कि शिक्षा ही जीवन में प्रगति का मार्ग है, छात्रों को कठिन अध्ययन करना चाहिए और समाज के वफादार नेता बनना चाहिए।"
- "हमें शिक्षा के प्रसार को उतना ही महत्व देना चाहिए, जितना कि हम राजनीतिक आंदोलन को महत्व देते हैं।"
- "तकनीकी और वैज्ञानिक प्रशिक्षण के बिना देश की कोई भी विकास योजना पूरी नहीं होगी।"
- "शिक्षित बनो, आंदोलन करो, संगठित रहो, आत्मविश्वासी बनो, कभी भी हार मत मानो, यही हमारे जीवन के पांच सिद्धांत हैं।"
- " किसी भी समाज का उत्थान उस समाज में शिक्षा की प्रगति पर निर्भर करता है।"
- ज्ञान मानव जीवन का आधार है। छात्रों की बौद्धिक क्षमता को बढ़ाना और बनाए रखना, साथ ही उनकी बुद्धि को उत्तेजित करने का हर संभव प्रयास करना चाहिए।"
- "आप शिक्षित हो गए इसका मतलब यह नहीं है कि सब कुछ हुआ। शिक्षा के महत्व में कोई संदेह नहीं है, लेकिन शिक्षा के साथ-साथ शील (नैतिकता) भी सुधारी जानी चाहिए..... नैतिकता के बिना शिक्षा का मूल्य शून्य है।"
- इस दुनिया में स्वाभिमान से जीना सीखो। इस दुनिया में कुछ करके ही दिखाना है यह महत्वकांक्षा आपके अंदर हमेशा आपके अंदर होनी चाहिए। (याद रखना) जो लड़ते हैं, वही आगे बढ़ते हैं।"
- "पढ़ो! संगठित रहो! और संघर्ष करो।"
- शिक्षा शेरनी का दूध है और जो उसे पिएगा वह शेर की तरह जरूर गुर्राएगा।"
- "प्रत्येक छात्र को अपने चरित्र का निर्माण प्रज्ञा, शील, करुणा, विद्या और मैत्री इन पंचतत्वों के आधार पर करना चाहिए।"

वर्तमान समय में प्रासंगिकता

वर्तमान समय में डॉ. भीमराव अंबेडकर के शैक्षिक विचारों का उतना ही महत्व है, जितना उनके समय में था। यदि कोई देश आधुनिकता में अपना अस्तित्व बनाए रखना चाहता है तो उस देश को एक प्रभावी शिक्षा प्रणाली की आवश्यकता है। जब शिक्षा प्रणाली प्रभावी हो जाती है तो यह वैज्ञानिक और तकनीकी विकास को आकार देती है। देश में, यदि प्राथमिक शिक्षा का आधार कमजोर है, तो उच्च शिक्षा का कोई महत्व/उपयोग नहीं है। इसलिए डॉ. भीमराव अंबेडकर जी ने प्राथमिक शिक्षा को सभी के लिए अनिवार्य कहा है यह भी सुनिश्चित किया है कि प्राथमिक शिक्षा में प्रवेश लेने वाला छात्र/व्यक्ति तब तक स्कूल को ना छोड़े,जब तक वह साक्षर नहीं हो जाता। जब भारतीय सरकार ने 1 अप्रैल, 2010 में शिक्षा को 'सभी के लिए शिक्षा' एक मौलिक अधिकार घोषित किया। इस दिन को डॉ. भीमराव जी का स्वप्न साकार हुआ। क्योंकि जब हम 'शिक्षा के अधिकार अधिनियम, 2009' का अध्ययन करते हैं, तो इसके कई प्रावधान डॉ. अंबेडकर जी के विचारों से मेल खाते हैं या समान दिखाई देते हैं। आज की शिक्षा प्रणाली में बदलाव डॉ. अंबेडकर जी के विचारों के योगदान के कारण ही संभव हुआ है।

शैक्षिक निहितार्थ

1.शिक्षा से आत्मविश्वास, आत्मनिर्भरता, नैतिकता, व्यक्तित्व का विकास होना चाहिए।

2. शिक्षा को समाज में व्याप्त कुरीतियों जैसे छुआछूत, सामाजिक अंतर, रूढ़िवादी विचार द्वारा का खंडन किया जाना चाहिए।

3.शिक्षा को अनुशासन, एकाग्रता, अच्छे व बुरे का विवेक आदि गुणों का विकास करना चाहिए।

4.शिक्षा को सार्वभौमिक भाईचारे की भावना का विकास करना चाहिए।

5.शिक्षा को शिक्षा के उद्देश्य को प्राप्त करने में महत्वपूर्ण योगदान करना चाहिए।

निष्कर्ष

डॉ. भीमराव अंबेडकर जी के शिक्षा संबंधी विचार/शैक्षिक विचार वर्तमान स्थिति में मील के पत्थर के समान हैं। इनके प्राथमिक व उच्चतर शिक्षा प्रणाली संबंधी विचार आज कानून के रूप में स्थापित हैं। आज भारत विश्वशक्ति के रूप में प्रकट हो रहा है, यह सब शिक्षा के माध्यम से ही संभव हो रहा है। आज हम सब भारतवासी अपने संविधान पर गर्व करते हैं। इसका श्रेय भी 'भारत रत्न' डॉ. भीमराव अंबेडकर जी को जाता है। क्योकि वे ही हमारे संविधान के निर्माता हैं। डॉ. भीमराव अंबेडकर जी ने भारतीय समाज में दो मूलभूत कमियां प्रकट की प्रथम, समानता का अभाव और द्वितीय, बंधुत्व के सिद्धांत के ज्ञान में कमी। क्योंकि ये दो कमियां न्याय, स्वतंत्रता, एकता, अखंडता और बंधुत्व प्राप्त करने के लिए बाधा थी। डॉ. भीमराव जी ने इनके प्रति सभी को जागृत किया। साथ में, इन बाधाओं को दूर करने का प्रयत्न किया जो केवल शिक्षा के माध्यम से ही संभव था।

संदर्भ

- जाटव, डी.आर (1995) "डॉ. भीमराव अंबेडकर का समाज दर्शन", जयपुर: समता साहित्य सदन।
- प्रकाश, ए (2004) "डॉक्टर भीमराव अंबेडकर एवं स्वामी विवेकानंद का भारतीय समाज की शिक्षा पद्धति पर विचारों का तुलनात्मक अध्ययन"।
- वालिया,डॉ. जे.एस. (2007) "शिक्षा के दार्शनिक व सामाजिक आधार" लुधियाना: पाल पब्लिकेशन
- सिंह, एस. (2009) "डॉक्टर भीमराव अंबेडकर के विचारों का वर्तमान शैक्षिक परिप्रेक्ष्य में अध्ययन"
- रानी, ए. (2013)"डॉक्टर भीमराव अंबेडकर का भारतीय शिक्षा के क्षेत्र में योगदान का अध्ययन"
- https//navbharattimes.indiatimes.com/dr.bhimraoambedkarquotes.
- https//figshare.com>articles